वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 12 | बुधवार 10 जून 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत राज्यपाल ने विद्यार्थियों से किया संवाद

भारत संस्कृति और परंपराओं में आरम्भ से ही श्रेष्ठ रहा: राज्यपाल

देश के युवा प्रतिभाशाली बने, इसी उद्देश्य से एक भारत श्रेष्ठ भारत के साथ विकसित भारत का संकल्प संजोया गया

आज का अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश और म्यांमार भारत के ही साम्राज्य का हिस्सा थे

जयपुर. शाबाश इंडिया

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े से मंगलवार को लोकभवन में आईआईआईटी धारवाड़, कर्नाटक के विद्यार्थियों ने मुलाकात की। एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत राज्यपाल ने इन विद्यार्थियों का अभिनन्दन करते हुए उनसे संवाद किया। राज्यपाल ने कहा कि भारत की सीमाएं प्राचीन काल में आज से बहुत अधिक विस्तृत थीं। उन्होंने कहाकि आज का अफगानिस्तान, गांधार और कंबोज, पाकिस्तान, बांग्लादेश, और म्यांमार भारत के ही विशाल साम्राज्य का हिस्सा थे। उन्होंने कहा कि विश्व में सर्वाधिक 19 विश्वविद्यालय भारत में थे। सुदूर देशों से लोग भारत में पढ़ने आते थे। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारत के लोगों की बौद्धिक क्षमता बहुत अधिक थी। बप्पा रावल के नाम से ही रावल पिंडी स्थान का नामकरण हुआ। उन्होंने कहा कि भारत संस्कृति और परंपराओं में आरम्भ से ही श्रेष्ठ रहा है। इसे फिर से श्रेष्ठ बनाने की आवश्यकता है। राज्यपाल ने नई शिक्षा नीति की चर्चा करते हुए कहा कि इसमें प्राचीन गौरव की अनुभूति कराते युवाओं को सभी क्षेत्र में अग्रणी करने पर जोर है। उन्होंने राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र की वीरांगना कालीबाई के बारे में भी कर्नाटक के विद्यार्थियों को विस्तार से बताया और कहा कि स्वाधीनता संग्राम में कालीबाई की महती भूमिका रही। उन्होंने कहा कि भारत श्रेष्ठ रहा है, इसका इतिहास प्रौद्योगिकी के विद्यार्थियों को पता होना चाहिए।

खेल युवाओं के सर्वांगीण विकास का आधार : कर्नल राठौड़

अधिक से अधिक बच्चों को खेलों से जोड़ने के लिए व्यवस्थाएं विकसित होगी

जयपुर. शाबाश इंडिया। शहर में खेलों को बढ़ावा देने और बच्चों-युवाओं को बेहतर खेल सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने चित्रकूट स्टेडियम का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्टेडियम की वर्तमान स्थिति, उपलब्ध खेल सुविधाओं और खिलाड़ियों की आवश्यकताओं का विस्तृत जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उनके साथ बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता, स्थानीय नागरिक एवं संबंधित अधिकारी भी मौजूद रहे। कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने स्टेडियम परिसर में घूमकर विभिन्न खेल गतिविधियों के लिए उपलब्ध संसाधनों का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों से खिलाड़ियों को दी जा रही सुविधाओं, खेल मैदान की स्थिति, रख-रखाव तथा भविष्य में आवश्यक सुधारों के संबंध में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि खेल केवल प्रतियोगिता का माध्यम और युवाओं के सर्वांगीण विकास का आधार हैं, इसलिए खेल संबंधी बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने विशेष रूप से बच्चों और युवा खिलाड़ियों के लिए खेल सुविधाओं के विस्तार पर जोर दिया और कहा कि क्षेत्र के अधिक से अधिक बच्चों को खेलों से जोड़ने के लिए व्यवस्थाएं विकसित होगी जिससे उन्हें स्थानीय स्तर पर ही गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण और अभ्यास का वातावरण मिल सके।

उत्तराखंड की वादियों में गुलाबीनगर ग्रुप की मनोरंजक एवं धार्मिक यात्रा

शाबाश इंडिया

उत्तराखंड की मनमोहक वादियों में आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक भ्रमण के उद्देश्य से 05 जून 2026 को प्रातः 6:00 बजे जयपुर से गुलाबीनगर ग्रुप के 27 सदस्यीय दल को बड़ागांव एवं मुक्तेश्वर के लिए रवाना किया गया। फेडरेशन के कार्याध्यक्ष एवं ग्रुप के परम संरक्षक श्री सुरेंद्र जैन पांड्या तथा फेडरेशन के राष्ट्रीय अतिरिक्त महासचिव श्री राजेश बड़जात्या ने बस को हरी झंडी दिखाकर यात्रा का शुभारंभ किया। यात्रा में ग्रुप अध्यक्ष श्रीमती सुशीला विनोद बड़जात्या, निवर्तमान अध्यक्ष श्री सुनील सुमन बज, विशिष्ट सलाहकार श्री पदम भावसा, श्री रमेश गुणमाला गंगवाल, श्री नरेंद्र विनिया

कासलीवाल, श्री महावीर संतोष चाँदवाड़, श्री अशोक कांता कासलीवाल, श्री चेतन रेखा जैन, श्री राजेंद्र मंजू कासलीवाल, श्री विनोद किरण झांझरी, श्री चंद्रप्रकाश चंदा छाबड़ा, श्री सुनील मीना काला, श्री भागचंद मीना जैन, श्रीमती रत्नप्रभा शाह एवं श्रीमती शालू जैन सहित अन्य सदस्य सम्मिलित हैं। यह 7 दिवसीय मनोरंजक एवं धार्मिक यात्रा 05 जून 2026 से 11 जून 2026 तक आयोजित की जा रही है। यात्रा मार्ग में बड़ागांव, त्रिलोकधाम, मुक्तेश्वर स्थित सामायिक रिसॉर्ट, अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ, मंगलायतन, मथुरा चौरासी, बोलखेड़ा एवं भुसावर होते हुए पुनः जयपुर वापसी होगी। यात्रा का मुख्य आकर्षण मुक्तेश्वर (नैनीताल) स्थित अष्टापद सामायिक रिसॉर्ट रहेगा, जहाँ से प्रतिदिन विभिन्न दर्शनीय एवं धार्मिक स्थलों का भ्रमण किया जाएगा। रिसॉर्ट परिसर में भव्य जैन मंदिर भी स्थित है। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन सायंकाल लाइव संगीत तथा सात्विक भोजन की विशेष व्यवस्था रहेगी, जिससे यात्रियों को आध्यात्मिक वातावरण के साथ मनोरंजन का भी आनंद प्राप्त होगा। इस यात्रा के संयोजक श्री पदम जी भावसा हैं।

पर्यावरण चेतना और शौर्य को नमन : जैन सोशल ग्रुप संस्कार ने मनाया अनूठा उत्सव

उदयपुर. शाबाश इंडिया

जैन सोशल ग्रुप संस्कार, उदयपुर द्वारा एक अनूठे एवं भव्य आयोजन के अंतर्गत पूल पार्टी के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण एवं महाराणा प्रताप जयंती समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मेवाड़ रिसोर्ट में आयोजित इस कार्यक्रम में ग्रुप के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्विमिंग पूल में मनोरंजन का आनंद लेने के पश्चात रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ग्रुप की अध्यक्ष डॉ. प्रमिला जैन ने बताया कि सदस्यों ने ''पर्यावरण संरक्षण'' एवं ''वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप'' विषयों पर बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए एक से बढ़कर एक शानदार प्रस्तुतियाँ दीं, जिन्होंने उपस्थित सभी लोगों का मन मोह लिया। संस्थापक अध्यक्ष प्रकाश कोठारी ने कार्यक्रम के लिए रिसोर्ट उपलब्ध करवाने पर मेवाड़ रिसोर्ट के निदेशक श्री दिनेश जी सेठिया एवं श्री महावीर जी सेठिया का आभार व्यक्त करते हुए उनका सम्मान किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में डॉ. प्रमिला जैन, डॉ. रेनू सिरोया, प्रतिभा मेहता, नीता धूप्या, चंद्रप्रकाश मेहता, फतेह सिंह मेहता, अनीता पगारिया तथा शशि मेहता ने अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुतियों से समां बाँध दिया। कार्यक्रम का प्रभावी एवं मंचन-कुशल संचालन रेनू सिरोया एवं प्रतिभा मेहता ने किया। ग्रुप के सचिव जितेंद्र धाकड़ ने सभी अतिथियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम की शुरूआत में सभी सदस्यों ने ''हाई टी'' का आनंद लिया तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के उपरांत स्वादिष्ट भोजन का लुत्फ उठाया। अंत में सामूहिक राष्ट्रगान के साथ इस यादगार एवं सफल आयोजन का समापन हुआ।

स्वास्थ्य पर स्वर (श्वास) का प्रभाव

जिस समय जो स्वर चलता है, उस समय हमारे शरीर पर उसी स्वर का प्रभाव माना जाता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने इस विषय पर गहन अध्ययन किया है। दाएं नथुने से चलने वाला श्वास ''दायाँ स्वर'' तथा बाएँ नथुने से चलने वाला श्वास ''बायाँ स्वर'' कहलाता है। इसका ज्ञान नथुनों के पास हाथ रखकर सहज रूप से प्राप्त किया जा सकता है। जिस समय जिस नथुने से श्वास-प्रश्वास अधिक गति से चल रहा हो, उस समय वही नथुना सक्रिय माना जाता है। जब ''सूर्य नाड़ी'', अर्थात दायाँ स्वर (नथुना), चल रहा हो, तब भोजन करने से वह शीघ्र पचता है। वहीं पेय पदार्थ ग्रहण करते समय ''चन्द्र नाड़ी'', अर्थात बायाँ स्वर, सक्रिय होना उचित माना गया है। यदि पेय पदार्थ पीते समय बायाँ स्वर सक्रिय न हो, तो दाएँ नथुने को हल्के से उँगली से दबाकर बाएँ स्वर को सक्रिय किया जा सकता है। भोजन अथवा किसी भी खाद्य पदार्थ का सेवन करते समय यदि ''पिंगला नाड़ी (सूर्य स्वर)'' सक्रिय न हो, तो कुछ समय के लिए बाईं करवट लेटने या बाईं काँख में कपड़े की छोटी पोटली दबाने से इसे सक्रिय करने का प्रयास किया जा सकता है। ऐसा करने से स्वास्थ्य की रक्षा होती है तथा रोगों की संभावना कम मानी जाती है। प्रातःकाल उठते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि जो स्वर चल रहा हो, उसी ओर का हाथ पहले चेहरे पर फेरें तथा उसी ओर का पैर पहले भूमि पर रखें। परंपरागत मान्यता के अनुसार ऐसा करने से कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। दायाँ स्वर चलते समय मलत्याग तथा बायाँ स्वर चलते समय मूत्रत्याग करना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना गया है। कुछ परंपरागत मतों के अनुसार इसके विपरीत करने से शारीरिक विकृतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि लगभग एक वर्ष तक के शिशु के स्वरों पर प्रकृति का स्वाभाविक नियंत्रण रहता है। मान्यता के अनुसार शिशु जब मूत्रत्याग करता है, तब उसका बायाँ स्वर तथा मलत्याग करते समय दायाँ स्वर सक्रिय रहता है। लघुशंका बैठकर करना अधिक उचित माना गया है। पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार खड़े होकर मूत्रत्याग करने से शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। कुछ लोग मुँह से श्वास लेने की आदत रखते हैं। इससे धूल, प्रदूषण और रोगजनक सूक्ष्मजीव श्वसन तंत्र में प्रवेश कर सकते हैं, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए श्वास सदैव नाक से ही लेना चाहिए। किसी विशेष कार्य के लिए घर से निकलते समय जो स्वर सक्रिय हो, उसी ओर का पैर पहले आगे बढ़ाने की परंपरा भी बताई गई है। ऐसा माना जाता है कि इससे कार्यों में आने वाली बाधाएँ कम होती हैं। इस प्रकार स्वर का अपना एक विशिष्ट विज्ञान और पारंपरिक महत्व बताया गया है। इसे समझकर तथा छोटी-छोटी सावधानियाँ अपनाकर व्यक्ति अपने स्वास्थ्य की रक्षा और व्यावहारिक जीवन में सफलता प्राप्त करने का प्रयास कर सकता है।

भीषण गर्मी में तपता हॉल, फिर भी 400 युवाओं की धर्म-पिपासा ने रचा इतिहास

लब्धिसार शिविर: ए.सी.-कूलर के बिना 6-7 घंटे अध्ययन, करणानुयोग के प्रति युवाओं की अद्भुत साधना

इन्दौर.शाबाश इंडिया

जब देश के अधिकांश हिस्से भीषण गर्मी की चपेट में हों और लोग कुछ क्षण भी वातानुकूलित वातावरण के बिना रहना कठिन समझते हों, ऐसे समय मध्यप्रदेश की आर्थिक राजधानी इन्दौर में एक ऐसा दृश्य देखने को मिला जिसने धर्म, अध्ययन और युवा शक्ति को लेकर बनी अनेक धारणाओं को बदल दिया। 30 मई से 7 जून 2026 तक मोदीजी की नसिया, बड़ा गणपति, इन्दौर में आयोजित लब्धिसार अध्ययन शिविर में देशभर से लगभग 400 युवाओं ने भाग लिया। इनमें करीब 250 प्रतिभागी इन्दौर के बाहर से आए थे। शिविर में अनेक त्यागी-व्रती जनों के साथ आचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री संबुद्धसागरजी महाराज की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। सबसे आश्चर्यजनक तथ्य यह रहा कि भीषण गर्मी के बावजूद ये युवा लोहे की चादरों से बने विशाल हॉल में बिना ए.सी. और कूलर के प्रतिदिन 6 से 7 घंटे तक बैठकर जैन दर्शन के अत्यंत गूढ़ विषय करणानुयोग का अध्ययन करते रहे। केवल श्रवण ही नहीं, बल्कि अध्ययन, मनन, चर्चा और गृहकार्य के माध्यम से उन्होंने विषय को आत्मसात करने का गंभीर प्रयास किया। आज जब अक्सर यह कहा जाता है कि युवा पीढ़ी धर्म और अध्यात्म से दूर होती जा रही है, तब यह शिविर उस धारणा के विपरीत एक जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया। यह केवल एक अध्ययन शिविर नहीं, बल्कि जिज्ञासा, अनुशासन और आध्यात्मिक पिपासा का विराट संगम था।

अमेरिका से इन्दौर तक धर्म-साधना का प्रेरक सफर

इस आयोजन के केंद्र में प्रतिमाधारी श्रावक पं. विकास छाबड़ा एवं सारिका छाबड़ा रहे। अमेरिका में तकनीकी क्षेत्र के उज्ज्वल भविष्य को छोड़कर भारत लौटे इस युवा दंपती ने अपना जीवन जैन दर्शन के अध्ययन, अध्यापन और प्रसार के लिए समर्पित कर दिया है। आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पारंपरिक जैन आगमों के गहन अध्ययन का समन्वय करते हुए वे वर्षों से युवाओं को जैन दर्शन के चारों अनुयोग–प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग–की सरल एवं तार्किक व्याख्या प्रदान कर रहे हैं। करणानुयोग को जैन साहित्य का अत्यंत गंभीर और दुरूह विषय माना जाता है तथा इसके विद्वान आज भी विरले ही मिलते हैं। ऐसे विषय को सैकड़ों युवाओं के बीच लोकप्रिय बनाना अपने आप में एक असाधारण उपलब्धि है।

आचार्य नेमिचंद्र के लब्धिसार का सरल प्रस्तुतीकरण

शिविर में आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती कृत महान ग्रंथ 'लब्धिसार' का अध्ययन कराया गया। सामान्यतः यह ग्रंथ गंभीर अध्येताओं तक ही सीमित माना जाता है, किंतु पं. विकास छाबड़ा एवं सारिका छाबड़ा ने अपनी विशिष्ट शिक्षण पद्धति के माध्यम से इसे युवाओं के लिए भी सहज एवं ग्राह्य बना दिया। अध्ययन की गंभीरता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आठ-दस वर्ष की आयु के बालक-बालिकाएँ भी प्राकृत

गाथाओं का शुद्ध एवं सस्वर पाठ करते दिखाई दिए। यह दृश्य इस बात का संकेत था कि यह शिविर केवल वर्तमान ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी प्रभावित करने वाला है।

सफलता के पीछे समर्पित परिवार और संगठन

इस विशाल आयोजन का सफल संचालन यंग जैन स्टडी ग्रुप तथा श्री विमलचंद माणकचंदजी छाबड़ा पारमार्थिक न्यास, गांधीनगर, इन्दौर के माध्यम से किया गया। संपूर्ण आयोजन में श्री विमलचंदजी छाबड़ा का मार्गदर्शन एवं परिवार का समर्पण विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। विगत कई वर्षों से जैन दर्शन के संरक्षण, अध्ययन और प्रसार में निरंतर सक्रिय छाबड़ा परिवार ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि समर्पण, अध्ययन और सेवा की भावना हो तो पंचमकाल में भी धर्म की ज्योति नई पीढ़ी तक प्रभावी रूप से पहुँचाई जा सकती है। इन्दौर में संपन्न यह शिविर केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि इस बात का प्रमाण था कि आज भी युवा पीढ़ी अध्यात्म की ओर आकर्षित है। आवश्यकता केवल ऐसे मार्गदर्शकों और ऐसे आयोजनों की है, जो धर्म को जीवनोपयोगी और सहज भाषा में प्रस्तुत कर सकें। भीषण गर्मी में तपते उस हॉल में वास्तव में केवल शरीर ही नहीं तप रहे थे, बल्कि वहाँ सैकड़ों युवा आत्मज्ञान की अग्नि में अपने जीवन को आलोकित करने का प्रयास कर रहे थे।

राजेन्द्र जैन महावीर
वीरेन्द्र जैन वीरू
मो.: 9407492577

चित्र: लब्धिसार अध्ययन शिविर में अध्ययनरत शिविरार्थी।

केवल प्रवचन नहीं, आचरण पर भी विशेष बल

शिविर की विशेषता केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रही। भोजन, दिनचर्या, अनुशासन और मर्यादा के प्रत्येक पक्ष पर समान रूप से ध्यान दिया गया। शिविरार्थियों को शुद्ध एवं सात्विक भोजन उपलब्ध कराया गया। दूध से लेकर भोजन तक प्रत्येक व्यवस्था में शुद्धता, मयार्दा और आत्मीयता का भाव स्पष्ट दिखाई देता था। दूर-दूर से आए युवाओं ने व्यवस्थाओं की मुक्तकंठ से सराहना की।

धर्म का ऐसा अभियान जो साधु-संतों तक पहुँचा

उल्लेखनीय है कि पं. विकास छाबड़ा, श्रमणाचार्य विशुद्धसागरजी महाराज से व्रत लेकर प्रतिमाधारी श्रावक बने हैं। विगत वर्षों में अनेक साधु-संतों ने भी उनसे करणानुयोग का अध्ययन किया है। गत वर्ष मुनिश्री सुयशसागरजी महाराज ससंघ ने गांधीनगर चातुर्मास के दौरान उनसे करणानुयोग का अध्ययन किया था। करणानुयोग जैसे जटिल विषय को सरल बनाने के लिए पं. प्रकाश छाबड़ा एवं पूजा छाबड़ा द्वारा "गोम्मटसार जीवकाण्ड" को रेखाचित्रों और तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिसे वर्तमान समय में इस विषय की अत्यंत उपयोगी एवं सरल अध्ययन सामग्री माना जा रहा है।

इस आयोजन के केंद्र में प्रतिमाधारी श्रावक पं. विकास छाबड़ा एवं सारिका छाबड़ा रहे। अमेरिका में तकनीकी क्षेत्र के उज्ज्वल भविष्य को छोड़कर भारत लौटे इस युवा दंपती ने अपना जीवन जैन दर्शन के अध्ययन, अध्यापन और प्रसार के लिए समर्पित कर दिया है।

राजनीति

ईरान-इजराइल तनाव

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी

मध्य पूर्व एक बार फिर ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहां किसी भी छोटी चिंगारी से व्यापक क्षेत्रीय संघर्ष भड़क सकता है। अप्रैल 2026 में लागू अस्थायी संघर्ष विराम के बावजूद ईरान और इजराइल के बीच तनाव लगातार बना रहा और 8 जून 2026 को दोनों देशों के बीच मिसाइल तथा हवाई हमलों की खबरों ने स्थिति को और गंभीर बना दिया। अंतर्राष्ट्रीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार ईरान ने इजराइली सैन्य ठिकानों को निशाना बनाकर बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं, जबकि इजराइल ने जवाबी कार्रवाई में ईरान के कई रणनीतिक ठिकानों पर हवाई हमले किए। यह टकराव केवल दो देशों के बीच सैन्य संघर्ष नहीं, बल्कि क्षेत्रीय प्रभाव, सुरक्षा चिंताओं, परमाणु कार्यक्रमों और प्रॉक्सी संगठनों से जुड़े जटिल भू-राजनीतिक समीकरणों का परिणाम भी है। लेबनान में हिजबुल्लाह, यमन के हूती विद्रोही तथा सीरिया और इराक के विभिन्न सशस्त्र गुट इस संकट को और अधिक जटिल बना रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने इजराइल के सैन्य अड्डों को निशाना बनाया, जबकि इजराइल ने रडार केंद्रों और सैन्य प्रतिष्ठानों पर कार्रवाई की। दोनों पक्ष संघर्ष विराम की अलग-अलग व्याख्या कर रहे हैं, जिससे स्थिति लगातार बिगड़ती दिखाई दे रही है। इसी बीच हूती विद्रोहियों की ओर से इजराइल के खिलाफ हमलों और लाल सागर में समुद्री गतिविधियों को बाधित करने की चेतावनियों ने वैश्विक व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति को लेकर नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। अमेरिका ने भी दोनों देशों से संयम बरतने और कूटनीतिक समाधान खोजने की अपील की है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह संघर्ष व्यापक क्षेत्रीय युद्ध में बदलता है तो इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ेगा। पहले से रूस-यूक्रेन युद्ध, महंगाई, आपूर्ति श्रृंखला संकट और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं से जूझ रही दुनिया के लिए यह नया संकट गंभीर परिणाम ला सकता है। सबसे त्वरित प्रभाव तेल बाजार पर दिखाई दे रहा है। मध्य पूर्व विश्व के प्रमुख ऊर्जा उत्पादक क्षेत्रों में शामिल है और तनाव बढ़ने के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में तेजी देखी गई है।

संपादकीय

क्या 2029 की तैयारी का मजबूत संकेत?

दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में 8 जून को इंडिया गठबंधन की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई, जिसमें कांग्रेस के नेतृत्व में करीब 23 विपक्षी दलों के नेताओं ने भाग लिया। बैठक में मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, ममता बनर्जी, अखिलेश यादव, फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला जैसे प्रमुख नेता मौजूद रहे, जबकि उद्धव ठाकरे वर्चुअल माध्यम से जुड़े। हालांकि, डीएमके और आम आदमी पार्टी ने बैठक में हिस्सा नहीं लिया, जिससे गठबंधन की एकजुटता पर सवाल भी उठे।

बैठक का मुख्य उद्देश्य 2029 के लोकसभा चुनावों की रणनीति तैयार करना और विभिन्न जन मुद्दों पर साझा विपक्षी रुख विकसित करना था। इस दौरान पांच सूत्री एजेंडे पर सहमति बनी, जिसमें सबसे प्रमुख विषय नीट यूजी 2026 पेपर लीक प्रकरण रहा। विपक्ष ने इस मामले में शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग करते हुए छात्र आंदोलनों का समर्थन किया और विभिन्न राज्यों में हुए प्रदर्शनों के दौरान पुलिस कार्रवाई की आलोचना की। दूसरा बड़ा मुद्दा मतदाता सूची में कथित गड़बड़ियों का रहा। गठबंधन ने इस संबंध में भारत के मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखने का निर्णय लिया और चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करने की मांग उठाई। इसके साथ ही बेरोजगारी, महंगाई और आर्थिक चुनौतियों पर सर्वदलीय चर्चा कराने की भी मांग की गई। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने विपक्षी दलों से एकता बनाए रखने का आह्वान करते हुए नियमित समन्वय पर जोर दिया। बैठक में हर दो महीने में समीक्षा बैठक आयोजित करने और संसद के भीतर भी दैनिक स्तर पर समन्वय स्थापित करने का निर्णय लिया गया। 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद यह गठबंधन की पहली बड़ी बैठक थी, जिसने विपक्ष को फिर से सक्रिय करने का प्रयास किया। हालांकि, बैठक ने गठबंधन की आंतरिक चुनौतियों को भी उजागर किया। डीएमके की अनुपस्थिति और आम आदमी पार्टी का दूरी बनाए रखना राजनीतिक मतभेदों की ओर संकेत करता है। इसके अलावा विभिन्न क्षेत्रीय दलों की अपनी-अपनी प्राथमिकताएं और नेतृत्व संबंधी आकांक्षाएं भविष्य में गठबंधन की मजबूती के लिए चुनौती बन सकती हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि विपक्ष महंगाई, बेरोजगारी, परीक्षा अनियमितताओं और आर्थिक मुद्दों पर साझा और प्रभावी आंदोलन खड़ा कर पाता है, तो वह आगामी चुनावों में मजबूत विकल्प के रूप में उभर सकता है। दूसरी ओर, यदि यह पहल केवल बैठकों और औपचारिक बयानों तक सीमित रहती है, तो जनता के बीच इसका प्रभाव सीमित रह सकता है। कुल मिलाकर, इंडिया गठबंधन की यह बैठक विपक्ष की नई सक्रियता का संकेत देती है। ममता बनर्जी और अखिलेश यादव जैसे क्षेत्रीय नेताओं की भागीदारी से गठबंधन को व्यापक आधार मिला है, लेकिन प्रमुख सहयोगियों की अनुपस्थिति और आंतरिक मतभेद इसकी सबसे बड़ी चुनौती बने हुए हैं। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

संपत्ति की जांच कब होगी?

डॉ. सत्यवान सौरभ

देश में जब भी भ्रष्टाचार, काले धन और आय से अधिक संपत्ति की चर्चा होती है, तब आम नागरिक के मन में एक प्रश्न अवश्य उठता है—आखिर संपत्ति की व्यापक, निष्पक्ष और पारदर्शी जांच कब होगी? महानगरों और विकसित शहरों की पॉश कॉलोनियों में तेजी से बनती आलीशान कोठियां, महंगे फार्म हाउस और करोड़ों रुपये की अचल संपत्तियां लोगों को यह सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि इनका निर्माण किन आय स्रोतों से हुआ है और क्या इनकी कीमत संबंधित व्यक्तियों की घोषित आय के अनुरूप है। यह प्रश्न किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं, बल्कि सुशासन और जवाबदेही की मांग से जुड़ा हुआ है। लोकतंत्र में जनता का विश्वास तभी मजबूत होता है जब कानून सभी पर समान रूप से लागू हो। यदि कोई व्यक्ति अपनी मेहनत, प्रतिभा, व्यवसाय, नौकरी या निवेश के माध्यम से आर्थिक सफलता प्राप्त करता है तो उसका सम्मान होना चाहिए। लेकिन जब घोषित आय और अर्जित संपत्ति के बीच असामान्य अंतर दिखाई देता है, तब निष्पक्ष जांच की मांग भी स्वाभाविक हो जाती है। संपत्ति अर्जित करना अपराध नहीं है, परंतु उसके स्रोत की वैधता और पारदर्शिता सुनिश्चित होना आवश्यक है। देश में लाखों उद्योगपति, व्यापारी, डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक और उद्यमी वर्षों की मेहनत से समृद्धि हासिल करते हैं। उनकी उपलब्धियों पर संदेह करना उचित नहीं होगा। किंतु कुछ मामलों में संपत्ति का आकार और घोषित आय के बीच इतना बड़ा अंतर दिखाई देता है कि वह सार्वजनिक चर्चा का विषय बन जाता है। ऐसे मामलों में कानून के दायरे में निष्पक्ष जांच लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिए आवश्यक है। आम नागरिक की चिंता केवल संपत्ति नहीं, बल्कि बढ़ती असमानता भी है। एक मध्यमवर्गीय परिवार जीवनभर की बचत और बैंक ऋण के सहारे अपना घर बनाता है, जबकि कुछ लोग कम समय में अपार संपत्ति के मालिक बन जाते हैं। यदि इसके पीछे वैध कारण हैं तो उन्हें स्पष्ट होना चाहिए, लेकिन यदि अनियमितता है तो कानून के अनुसार कार्रवाई भी होनी चाहिए। पारदर्शिता का अभाव व्यवस्था के प्रति अविश्वास को जन्म देता है। सार्वजनिक पदों पर बैठे अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों से अधिक जवाबदेही की अपेक्षा की जाती है। यदि उनकी संपत्ति वैध आय के अनुरूप है तो जांच उनकी ईमानदारी को प्रमाणित करेगी। वहीं बेनामी संपत्ति आज भी बड़ी चुनौती बनी हुई है, जहां वास्तविक स्वामी किसी अन्य व्यक्ति के नाम पर संपत्ति दर्ज कराकर पहचान छिपा लेता है। ऐसे मामलों में प्रभावी कानून और कठोर क्रियान्वयन जरूरी है। तकनीक के इस दौर में बैंकिंग रिकॉर्ड, आयकर रिटर्न, जीएसटी डेटा, डिजिटल भुगतान और संपत्ति पंजीकरण जैसी व्यवस्थाओं के माध्यम से वित्तीय गतिविधियों का विश्लेषण पहले से कहीं अधिक आसान हो गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा विश्लेषण की मदद से आय और संपत्ति के बीच असामान्य अंतर की पहचान भी संभव है। यदि इन संसाधनों का प्रभावी उपयोग किया जाए तो जांच प्रक्रिया अधिक पारदर्शी, त्वरित और निष्पक्ष बन सकती है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि जांच किसी राजनीतिक या व्यक्तिगत उद्देश्य से नहीं, बल्कि केवल तथ्य और प्रमाणों के आधार पर हो। कानून की विश्वसनीयता उसकी निष्पक्षता में निहित होती है। यदि सामान्य कर्मचारी अपनी आय का पूरा हिसाब देता है, तो प्रभावशाली व्यक्तियों और सार्वजनिक जीवन से जुड़े लोगों पर भी वही मानक समान रूप से लागू होने चाहिए।

पंचकल्याणक में महामुनि आदिनाथ का हुआ प्रथम आहार हुई समोसरण की रचना

आजकल लोग छोटी-छोटी बातों को लेकर लोग आत्महत्या कर रहे हैं मरना तुम्हारा धर्म नहीं समाधि मरण करना ही धर्म है: आचार्य विशुद्ध सागर

भिण्ड. शाबाश इंडिया

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के ज्ञान कल्याणक के दिन महा मुनिराज आदिकुमार को इच्छुक रस (गन्ने का रस) की विधि मिलने पर आहार चर्या विधि विधान से संपन्न हुई एवं दोपहर को समोसरण की रचना की गई जिसमें जिज्ञासु द्वारा प्रश्न करने पर समोसरण पर विराजमान पट्टाचार्य ने उनके प्रश्नों का समाधान किया। पट्टाचार्य ने कहा कि महापुरुषों की महिमा निराली है आत्मज्ञानी व्यक्ति के सामने क्रूर से क्रूर प्राणी शांत हो जाते हैं जातिगत बेरभाव भी छोड़ देते हैं देखो तीर्थंकर भगवान रिषवदेव से लेकर भगवान महावीर स्वामी पर्यंत का इतिहास सर्व जगत को विद्युत है जहां-जहां भगवान का बिहार होता था वहां वहां सुभिक्ष हो जाता था गाय एवं सिंह मैत्री भाव से सरिता के एक ही घाट पर पानी पीते थे उनके समूह शरण में धर्म सभा में तीन गति के जीव अपने अपने कोटे में बैठकर दिव्य वाणी श्री जिन देशना का श्रवण करते थे महापुरुषों की यही महिमा है बिना अस्त्र-शस्त्र उठाए सर्व लोक को अपना बना लेना उपसर्ग करता भी चरणों में आकर सम्यकतव निधि को प्राप्त कर लेते हैं घर-घर में आत्म विद्या उदघोषित हो ऐसा पवित्र भाव रखो अपने कसाए वासना पूर्ण विचारों के कारण किसी भी न प्रियांशु का विघात मत करो तथा भावों से देव एवं नारकियों की भी हत्या मत करो स्वयं के परिणाम को संभालो। पट्टचार्य ने आगे कहा कि देश राष्ट्र समाज धर्म एवं स्वयं पर के प्राणों की रक्षा करने के भाव हैं तो प्रत्येक सूत्र को अनेक श्रेणियां में देखना चाहिए सर्व जगत पूर्ण शुद्ध नहीं जी रहा है यह ध्रुव सत्य है पर जी रहा है जीते जीते शुद्ध अवस्था होते-होते एक क्षण परम शुद्ध में प्रवेश कोई बिरला साधु-पुरुष ही करता है तब वह कर्मशून्य कृतकृत्य परमात्मा पद को प्राप्त कर लेता है। उन्होंने कहा कि आपको लग सकता है कि इन सब जीवों की रक्षा से मुझे क्या लाभ आपको इनकी रक्षा से लाभ ही लाभ है विवेक पूर्वक विचार करो बुद्धि खुल जाएगी संसार का सर्व सुख तथा परमार्थ सब की रक्षा से ही संभव है पंच स्थावर एवं त्रस जीबो की रक्षा के बिना मानव जीवन सुरक्षित नहीं है सामान्य नागरिक जी रहे हैं सभी के होने से पर उन्हें अपनी अल्प प्रक्रिया से समझ ही नहीं आ रहा है कि उनका जीवन किसके माध्यम से सुरक्षित है। पट्टाचार्य ने कहा कि आजकल लोग छोटी-छोटी बातों को लेकर आत्महत्या कर रहे हैं मरना तुम्हारा धर्म नहीं समाधि मरण करना ही धर्म है आज इस सभा में सभी को संकल्प लेना है कि हम आत्महत्या नहीं करेंगे सभी लोगों ने हाथ उठाकर संकल्प लिया। इस अवसर पर विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाहा पूर्व विधायक संजीव सिंह कुशवाह भारत चतुवेर्दी विश्व प्रताप सिंह विष्णु पूर्व जिला अध्यक्ष रविसेन जैन धर्मेंद्र जैन पोस्ट ऑफिस प्रमोद जैन डब्बू पार्षद मनोज जैन यश जैन बिट्टू जैन देवेंद्र जैन नरेश जैन चक्रेश जैन विनोद जैन रविंद्र जैन राकेश जैन मनीष जैन मोहन जैन राजेंद्र जैन रमेश जैन सचिन जैन पिंकू जैन आदि बड़ी संख्या में महिला पुरुष बच्चे उपस्थित थे।

किशनगढ़ में चातुर्मास हेतु पट्टाचार्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज को श्रीफल भेंट

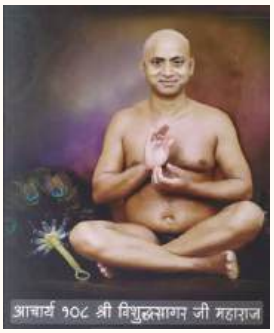
आचार्य १०८ श्री विशुद्धसागर जी महाराज

भिंड.शाबाश इंडिया। मध्यप्रदेश के भिंड में आयोजित भव्य पंचकल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, पट्टाचार्य आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंघ के समक्ष धर्मनगरी किशनगढ़ की ओर से वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु विनम्र निवेदन करते हुए श्रीफल भेंट किया गया। इस अवसर पर श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन पंचायत, मदनगंज-किशनगढ़ के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश बैद एवं मंत्री प्रदीप गंगवाल ने सकल दिगम्बर जैन समाज किशनगढ़ की ओर से अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए आचार्य श्री से आगामी चातुर्मास किशनगढ़ में करने का विनीत आग्रह किया। श्रीफल भेंट कार्यक्रम में पंचायत अध्यक्ष चंद्रप्रकाश बैद, मंत्री प्रदीप गंगवाल, मुकेश काला, अरविन्द बैद, सचिन अजमेरा, जयकुमार बड़जात्या सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे। सभी ने श्रद्धा एवं भक्ति भाव से आचार्य श्री के चरणों में नमन कर धर्मनगरी किशनगढ़ को चातुर्मास का पुण्य सौभाग्य प्रदान करने की प्रार्थना की। प्रचार-प्रसार प्रमुख जितेन्द्र पाटनी ने बताया कि वर्तमान में भिंड (मध्यप्रदेश) में आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन चल रहा है, जिसमें देशभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुँचकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं। समस्त किशनगढ़ जैन समाज ने आशा व्यक्त की है कि आचार्य श्री की मंगल कृपा से धर्मनगरी किशनगढ़ को आगामी चातुर्मास का परम सौभाग्य प्राप्त होगा।

बच्चों को मोबाइल से दूर रखें, धार्मिक पाठशाला में अवश्य भेजें

मुरैना/अम्बाह.शाबाश इंडिया। (मनोज जैन नायक)

नगर के जैन मंदिर में संचालित धार्मिक पाठशाला के संचालकों ने समाज के अभिभावकों से विनम्र अपील की है कि वे बच्चों को मोबाइल की लत से दूर रखने के लिए उन्हें नियमित रूप से धार्मिक पाठशाला में भेजें, ताकि उनमें उत्तम संस्कारों का बीजारोपण हो सके और उनका सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास हो। आचार्य श्री विन्रम सागर महाराज जी के पावन आशीर्वाद से अम्बाह में संचालित विन्रम एकेडमी जैन पाठशाला एवं वीतराग शासन बालिका मंडल के माध्यम से राजुल जैन, सैंकी जैन, राखी जैन, साक्षी जैन, राहुल जैन तथा आकाश जैन द्वारा सामूहिक बाल संस्कार शिक्षण शिविर का संचालन किया जा रहा है। साथ ही बाहर से आए विद्वान पंडित आगम जैन (शाहगढ़) एवं नयन जैन (खंडेरी) छोटे-छोटे बच्चों को धार्मिक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। पाठशाला संचालकों का कहना है कि जैन पाठशालाओं एवं धार्मिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों को अनेक महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त होते हैं।

मोबाइल से दूरी और सही दिशा

मोबाइल का अत्यधिक उपयोग बच्चों में चिड़चिड़ापन, एकाग्रता की कमी तथा समय की बबार्दी जैसी समस्याओं को जन्म देता है। धार्मिक पाठशालाएँ बच्चों का ध्यान रचनात्मक गतिविधियों और अच्छे संस्कारों की ओर आकर्षित करती हैं।

नैतिक एवं चारित्रिक विकास

पाठशाला में बच्चों को अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, करुणा और सदाचार जैसे जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जाती है, जिससे वे एक जिम्मेदार और संस्कारित नागरिक बनते हैं।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक जुड़ाव

कहानियों, भजनों और प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से बच्चे अपनी संस्कृति, पूजा-पद्धति तथा जैन धर्म के सिद्धांतों को सहज रूप से आत्मसात करते हैं। खाली समय में मोबाइल पर गेम खेलने या रील्स देखने के बजाय बच्चे धार्मिक एवं ज्ञानवर्धक गतिविधियों में भाग लेकर अपने व्यक्तित्व का सकारात्मक विकास करते हैं। पाठशाला संचालकों ने समाज के सभी अभिभावकों से आग्रह किया है कि वे अपने बच्चों को नियमित रूप से धार्मिक पाठशाला भेजकर उन्हें संस्कारवान, अनुशासित और धर्मनिष्ठ बनाने में सहयोग करें।

श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन समाज समिति, धावास के संरक्षक एवं निर्माण संयोजक जय कुमार जैन बड़जात्या ने बताया कि मंदिर निर्माणाधीन होने के बावजूद पूर्व में सुगंध दशमी के अवसर पर सजाई गई अलौकिक झांकी 'जैनत्व जगाओ-तीर्थ बचाओ' को सर्वश्रेष्ठ झांकी का पुरस्कार मिला था और अब धार्मिक संस्कार शिविर में 'बेस्ट मंदिर अवार्ड' प्राप्त होना धावास की पुण्यभूमि के गौरव का प्रतीक है।

श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर-धावास को मिला

बेस्ट मंदिर अवार्ड

शिविर संयोजकों एवं प्रतिभाओं का समाजजनों ने किया सम्मान

आचार्य सुनील सागर महाराज के मंगल आशीर्वाद से बन रहा चार मंजिला भव्य जिनालय,
वर्ष 2027 में होगा ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर
धावास, जयपुर

जयपुर। श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, धावास में श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर द्वारा आयोजित संस्कार शिविरों के समापन समारोह में धावास मंदिर को 'बेस्ट मंदिर अवार्ड' मिलने पर पूरे समाज में हर्ष का वातावरण है।

दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर के तत्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान बच्चों को केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित रखने के बजाय संस्कृति, संस्कार और धर्म से जोड़ने के उद्देश्य से जयपुर शहर के 63 दिगम्बर जैन मंदिरों में संस्कार शिविरों का आयोजन किया गया।

इनमें से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले आठ मंदिरों को 'बेस्ट मंदिर अवार्ड' से सम्मानित किया गया, जिनमें श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, धावास भी शामिल रहा।

पूज्य आचार्य श्री 108 सुनील सागर महाराज के पावन आशीर्वाद से निर्माणाधीन चार मंजिला भव्य श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, धावास को यह सम्मान मिलने पर समाज के पदाधिकारियों एवं वरिष्ठ सदस्यों ने शिविर संयोजकों की सराहना करते हुए उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएँ दी।

"धावास मंदिर को मिला 'बेस्ट मंदिर अवार्ड'

मंदिर निर्माणाधीन होने के बावजूद पूर्व में सुगंध दशमी के अवसर पर सजाई गई अलौकिक झांकी 'जैनत्व जगाओ-तीर्थ बचाओ' को सर्वश्रेष्ठ झांकी का पुरस्कार मिला था और अब धार्मिक संस्कार शिविर में 'बेस्ट मंदिर अवार्ड' प्राप्त होना धावास की पुण्यभूमि के गौरव का प्रतीक है।

सम्मान समारोह

सकल दिगम्बर जैन समाज, धावास की ओर से आयोजित सम्मान समारोह में संस्कार शिविर में चयनित प्रतिभाओं के साथ ही शिविर संयोजक रीता जैन, खुशबू छाबड़ा, दीक्षा जैन एवं हैमेन्द्र लुहाड़िया का माल्यार्पण कर तथा प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। साथ ही डिपोल जैन के अनुकरणीय योगदान की भी विशेष सराहना की गई।

विशेष सराहना

शिविर संयोजक रीता जैन, खुशबू छाबड़ा, दीक्षा जैन एवं हैमेन्द्र लुहाड़िया का माल्यार्पण कर तथा प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। साथ ही डिम्पल जैन के अनुकरणीय योगदान की भी विशेष सराहना की गई।

सम्मानित प्रतिभाएँ

शिविर संयोजक एवं श्री सन्मति सुनीलम् महिला मंडल की प्रचार मंत्री रीता जैन ने बताया कि सम्मान समारोह में नीतू जैन गर्ग, शिमला जैन, सीमा गोधा, निशा जैन, अंजलि बैद, मैना जैन, अल्पना ठोलिया, हैमेन्द्र लुहाड़िया, सरिता जैन, गुडलक जैन, अंजलि जैन, शुभिका जैन, अनुराधा अग्रवाल, सुरेन्द्र जैन, दीपा सौगाणी, प्रमोद जैन, दीक्षा जैन, माही अग्रवाल, अवनी जैन, दर्शिल जैन, आरुष अग्रवाल, आरव बैद, चित्रांश जैन, अयांशी जैन, जेनिल जैन, अश्विक जैन, जेनिका जैन, कृष्वि जैन, राजश्री जैन, राखी जैन, रिधान जैन, आरवी जैन एवं हितार्थ जैन को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए।

मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने दी जानकारी

मंदिर समिति के परम संरक्षक गजेन्द्र, प्रवीण एवं विकास बड़जात्या, अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार बैद तथा मंत्री मोसो ठोलिया ने बताया कि आचार्य सुनील सागर महाराज के मंगल सानिध्य में वर्ष 2027 में धावास की पुण्यधरा पर भव्य एवं ऐतिहासिक श्रीमद्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव का आयोजन किया जाएगा, जिसमें देशभर से हजारों दिगम्बर जैन श्रद्धालुओं के सम्मिलित होने की संभावना है।

- बच्चों में धार्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास
- जैन धर्म के सिद्धांतों, इतिहास एवं आचार्यों से परिचय
- व्यक्तित्व विकास, अनुशासन एवं समाज सेवा की भावना को प्रोत्साहन
- संस्कारी पीढ़ी तैयार कर समाज को मजबूत बनाना

निर्माणाधीन भव्य जिनालय

पूज्य आचार्य श्री 108 सुनील सागर महाराज के पावन आशीर्वाद से धावास में चार मंजिला भव्य श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण कार्य प्रगति पर है। यह मंदिर धावास की आध्यात्मिक धरोहर को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा।

वर्ष 2027 पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

धावास मंदिर... संस्कृति, संस्कार और समर्पण की जीवंत मिसाल

संतों की सुरक्षा एवं निर्बाध विहार :

वर्ष 2026 के चातुर्मास का होगा एक ज्वलंत और गंभीर चिंतन-विषय

तप, साधना, धर्म-प्रभावना, जीव-दया, सद्भावना एवं क्षमा का महापर्व होता है चातुर्मास।

– पदम जैन बिलाला
प्रान्तीय अध्यक्ष
धर्म जागृति संस्थान, राजस्थान

आषाढ़ मास के आगमन के साथ ही संतों के चातुर्मास स्थलों की घोषणाएं प्रारंभ हो जाती हैं और विभिन्न स्थानों के लिए उनका विहार आरंभ हो जाता है। श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएं संतों को अपने नगर में चातुर्मास हेतु निवेदन करने के साथ-साथ आवश्यक व्यवस्थाओं में भी जुट जाते हैं। उल्लेखनीय है कि वर्षायोग साढ़े तीन माह का तथा चातुर्मास चार माह का होता है। भारतीय पंचांग के अनुसार वर्ष 2026 में **चातुर्मास 28 जुलाई से 24 नवंम्बर** तक रहेगा, जबकि गत वर्ष इसका प्रारंभ 9 जुलाई से हुआ था।

1 संतों की सुरक्षा : समय की एक गंभीर आवश्यकता

संतों का विहार केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा नहीं, बल्कि जन-जन तक धर्म, नैतिकता, सदाचार एवं आध्यात्मिक चेतना का संदेश पहुंचाने का सशक्त माध्यम है। भारतीय संस्कृति में संत समाज सदैव त्याग, तप, संयम और आत्मकल्याण का प्रकाश-स्तंभ रहा है।

वर्तमान समय में बढ़ते यातायात, बदलती सामाजिक परिस्थितियों तथा विभिन्न चुनौतियों के बीच संतों की सुरक्षा एवं उनका सम्मानजनक, निर्बाध और सुरक्षित विहार एक अत्यंत ज्वलंत एवं गंभीर विषय बन गया है। हाल के वर्षों में संतों के साथ घटित हृदयविदारक और दुःखद घटनाओं ने समाज को गंभीर चिंतन के लिए विवश किया है।

ऐसी परिस्थितियों में वर्ष 2026 के चातुर्मास में यह अपेक्षित है कि समाज, प्रशासन तथा धर्मानुरागी जन संतों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें। विहार मार्गों की सुरक्षा, यातायात नियंत्रण, जन-जागरूकता, प्रशासनिक सहयोग तथा आवश्यक व्यवस्थाओं **पर व्यापक विचार-विमर्श होना चाहिए।**

चातुर्मास आत्मचिंतन, साधना और आध्यात्मिक उन्नयन का पावन अवसर हैं। ऐसे समय में संतों की सुरक्षा एवं सुरक्षित विहार की प्रभावी व्यवस्था सुनिश्चित करके हम न केवल धर्म की सेवा करेंगे, बल्कि अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

यह भी गंभीर चिंतन का विषय है कि अनेक राज्य सरकारों द्वारा संतों के विहार एवं प्रवास के दौरान पुलिस सुरक्षा उपलब्ध कराने के स्पष्ट निर्देश होने के बावजूद कई स्थानों पर श्रद्धालु प्रशासन को समय पर सूचना नहीं देते, जिसके दुष्परिणाम सामने आते हैं। इस दिशा में समाज को अधिक सजग एवं उत्तरदायी बनने की आवश्यकता है।

2 जनगणना, जैन पहचान एवं तीर्थ सुरक्षा पर होगा मंथन

वर्ष 2026 जैन समाज के लिए विशेष महत्व का वर्ष सिद्ध हो सकता है। चातुर्मास के दौरान जैन समाज की घटती जनसंख्या, नाम के साथ "जैन" उपनाम का प्रयोग, जनगणना में धर्म के कॉलम में "जैन" लिखवाने की जागरूकता, तीर्थ क्षेत्रों एवं मदिर संपत्तियों की सुरक्षा, युवाओं को धर्म से जोड़ना तथा उन्हें संस्कारवान बनाना जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गंभीर विचार-विमर्श होने की व्यापक संभावनाएं हैं।

3 विभिन्न धर्मों में चातुर्मास की परम्परा

भारत की विविध धार्मिक परम्पराओं में चातुर्मास का विशेष महत्व रहा है। विभिन्न धर्मों के संत-महात्माओं ने अपनी-अपनी मान्यताओं एवं धार्मिक विधानों के अनुरूप साधना-पद्धतियों का विकास किया है, जिनमें चातुर्मास की परम्परा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

वैदिक परम्परा में भी चातुर्मास का विधान है, किंतु जैन धर्म में इसका विशिष्ट महत्व है। "**जियो और जीने दो**" तथा "**परस्परोपग्रहो जीवानाम्**" जैसे महान सिद्धांत दया, करूणा और अहिंसा के व्यावहारिक स्वरूप को अभिव्यक्त करते हैं। वर्षा ऋतु में सूक्ष्म जीवों की रक्षा तथा आत्म-साधना के उद्देश्य से जैन संत एक स्थान पर स्थिर होकर तप, त्याग और साधना में लीन रहते हैं। विशेष रूप से दिगम्बर साधु अपरिग्रह और संयम के जीवंत उदाहरण हैं।

4 चातुर्मास का आध्यात्मिक महत्व

जैन धर्म में चातुर्मास की परम्परा अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली है। स्वयं भगवान महावीर स्वामी ने अपने जीवनकाल में विभिन्न स्थानों पर चातुर्मास किए थे। उनका अंतिम 42वां चातुर्मास पावापुरी में संपन्न हुआ था।

चातुर्मास का अर्थ है—चार माह तक साधु-साध्वियों का एक ही स्थान पर निवास करना। वर्षा ऋतु में मार्गों की कठिनाईयों तथा जीव-जंतुओं की अधिक उत्पत्ति के कारण जीवों की रक्षा और साधना की एकाग्रता हेतु यह शास्त्रीय व्यवस्था निर्धारित की गई है। अपवाद-स्वरूप संघ पर संकट आने अथवा किसी वृद्ध या रोगग्रस्त साधु की सेवा के लिए ही स्थान परिवर्तन की अनुमति मानी गई है।

5 चातुर्मास के प्रमुख व्रत एवं पर्व

सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से चातुर्मास का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इस अवधि में षोडशकारण व्रत, दशलक्षण पर्व, सुगंध दशमी, अनंत चतुर्दशी, क्षमावाणी पर्व तथा भगवान महावीर निर्वाणोत्सव जैसे महान धार्मिक पर्व आते हैं। ये पर्व आत्मशुद्धि, संयम, क्षमा और आध्यात्मिक जागरण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाते हैं।

6 एकता, सौहार्द और क्षमा का संदेश

चातुर्मास जहां तप, त्याग और साधना का पर्व है, वहीं यह सामाजिक समरसता और पारस्परिक सौहार्द का भी अनुपम अवसर है। संतों के सानिध्य में समाज में व्याप्त वैमनस्य, कटुता और विरोध की भावनाएं समाप्त होकर प्रेम, सहयोग और सद्भाव का वातावरण निर्मित होता है।

क्षमावाणी का महान संदेश एक स्वस्थ, सभ्य और संस्कारित समाज की आधारशिला है। इस दृष्टि से चातुर्मास केवल धार्मिक अनुष्ठानों का काल नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और संस्कृति को एक सूत्र में पिरोने का एक महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी अभियान है।

"इस प्रकार वर्ष 2026 का चातुर्मास विशेष महत्व रखता है कि यह केवल साधना और धर्म-प्रभावना का अवसर नहीं होगा, "

नवीन जैन ''नव'' को मिला अभिव्यंजना काव्य सम्मान 2026, नैनीताल में किया प्रभावशाली काव्यपाठ

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। हिंदी भाषा के साहित्यकारों और मंचीय कवियों के प्रतिष्ठित परिसंवाद ''अभिव्यंजना 5.0'' का आयोजन विश्व प्रसिद्ध संस्था ललित फाउंडेशन के तत्वावधान में 06, 07 एवं 08 जून 2026 को नमस्ते कॉर्बेट रिसोर्ट, जिम कॉर्बेट (नैनीताल), उत्तराखंड में आयोजित किया गया। संस्था के संस्थापक कवि अमित शर्मा ने बताया कि उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी रहे, जबकि समापन समारोह में युगकवि कुमार विश्वास मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पद्मश्री अशोक चक्रधर, हरिओम पंवार एवं शशिकांत यादव विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस राष्ट्रीय साहित्यिक अधिवेशन में विश्व विख्यात कवियों के साथ-साथ देशभर से चयनित नवांकुर एवं उभरते कवियों को भी आमंत्रित किया गया था। इसी क्रम में भीलवाड़ा के युवा कवि नवीन जैन 'नव' को भी आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के दौरान नवीन जैन 'नव' ने अपनी उत्कृष्ट एवं प्रभावशाली काव्य रचनाओं का पाठ कर श्रोताओं की भरपूर सराहना प्राप्त की। उनके साहित्यिक योगदान और प्रभावशाली प्रस्तुति को सम्मानित करते हुए उन्हें 'अभिव्यंजना काव्य सम्मान 2026' से अलंकृत किया गया।

श्री 1008 आदिनाथ जैन सेवा समिति के अध्यक्ष पद पर धर्मेन्द्र कुमार सेठी निर्विरोध निर्वाचित

जयपुर.शाबाश इंडिया। श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, सेक्टर-17 के अंतर्गत संचालित श्री 1008 आदिनाथ जैन सेवा समिति के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचन संपन्न होने पर समाज में हर्ष का वातावरण है। दिनांक 07 जून 2026, रविवार को आयोजित सर्वसमाज की आम सभा में सर्वसम्मति से समाज के युवा, मृदुभाषी, कर्मठ, जुझारू, सरल एवं सर्वसुलभ व्यक्तित्व के धनी श्री धर्मेन्द्र कुमार सेठी को श्री 1008 आदिनाथ जैन सेवा समिति के अध्यक्ष पद पर वर्ष 2026-28 के कार्यकाल के लिए निर्विरोध निर्वाचित किया गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र कुमार सेठी को समाज के सभी वरिष्ठजनों एवं गणमान्य सदस्यों ने हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए उनके सफल कार्यकाल की मंगलकामना की। महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती राखी जैन ने शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि संपूर्ण समाज एवं महिला मंडल मंदिर तथा समाज के विकास कार्यों में सदैव उनके सहयोगी एवं सहभागी रहेंगे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि श्री सेठी के कुशल नेतृत्व में समिति नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी तथा समाजहित में अनेक नवीन और जनकल्याणकारी कार्य संपन्न होंगे। आम सभा के अंत में उपस्थित सभी समाजबंधुओं ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष का अभिनंदन करते हुए उनके सफल एवं गौरवपूर्ण कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। समाज के सभी सदस्यों की ओर से श्री धर्मेन्द्र कुमार सेठी को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल कार्यकाल के लिए मंगलकामनाएँ।

प्राकृतमय हुआ रवीन्द्र भवन : प्राकृत विद्या शिक्षण शिविरों का भव्य सामूहिक समापन एवं सम्मान समारोह संपन्न

सैकड़ों शिविरार्थियों, अभिभावकों एवं प्राकृत प्रेमियों की उपस्थिति में प्रतिभाओं का हुआ सम्मान, प्राकृत प्रज्ञा प्रतियोगिता के विजेताओं को मिले आकर्षक पुरस्कार

सागर.शाबाश इंडिया। प्राकृत भाषा विकास फाउंडेशन द्वारा आयोजित प्राकृत विद्या शिक्षण शिविरों का भव्य सामूहिक समापन एवं सम्मान समारोह रवीन्द्र भवन, सागर में उत्साहपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में प्राकृत प्रेमियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं समाजजनों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष सफल बनाया। फाउंडेशन द्वारा सागर नगर एवं आसपास के क्षेत्रों में गौराबाई कटरा, रामपुरा वार्ड, बालक कॉम्प्लेक्स, वर्धमान कॉलोनी, नेहानगर, तिलकगंज, शाहगढ़, गढ़ाकोटा सहित अनेक स्थानों पर प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर आयोजित किए गए थे। इन शिविरों में विद्यार्थियों ने प्राकृत भाषा, जैन संस्कृति एवं भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री संतोष जैन ''घड़ी'' एवं जिला शिक्षा अधिकारी सागर श्री अरविंद जैन उपस्थित रहे। अतिथियों ने अपने उद्बोधनों में प्राकृत भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए फाउंडेशन के प्रयासों की सराहना करते हुए इसे भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल बताया। शिविर के क्षेत्रीय संयोजक श्री अनिल जैन शास्त्री एवं श्री विजय जैन शास्त्री (शाहगढ़) ने शिविरों की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। वहीं फाउंडेशन के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. आशीष जैन आचार्य (शाहगढ़, सागर) ने प्राकृत भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अधिकाधिक लोगों को प्राकृत अध्ययन से जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम का मार्गदर्शन श्री राजकुमार जैन शास्त्री, डॉ. हरिश्चंद्र जैन शास्त्री, श्री नन्हेभाई शास्त्री एवं श्री पवन दीवान द्वारा प्राप्त हुआ। समारोह के दौरान प्राकृत भाषा के प्रति उत्साह, समर्पण और अध्ययन की भावना से संपूर्ण सभागार प्राकृतमय हो उठा। इस अवसर पर विभिन्न शिविरों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान के पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही सभी शिविरों के स्थानीय संयोजकों, अध्यक्षों, मंत्रियों एवं सहयोगी कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम के विशेष आकर्षण के रूप में आयोजित प्राकृत प्रज्ञा प्रतियोगिता के प्रतिभागियों के लिए लकी ड्रा निकाला गया, जिसमें विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किए गए। समारोह का प्रभावी एवं सरस संचालन डॉ. राजेश जैन शास्त्री (ललितपुर) ने किया, जबकि अंत में अरुण जैन शास्त्री (जबलपुर) ने सभी अतिथियों, सहयोगियों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। यह आयोजन प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार, संरक्षण एवं नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक और भाषाई जड़ों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी पहल सिद्ध हुआ।

जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज में योग फेस्ट 2026 का शुभारंभ

योग हमें आत्मविकास, मानसिक शांति तथा आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करता है : रवि शर्मा

अजमेर.शाबाश इंडिया

जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित योग फेस्ट 2026 पखवाड़े का शुभारंभ 9 जून से किया गया। योग फेस्ट के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि विवेकानंद केंद्र, कन्याकुमारी के अखिल भारतीय योग प्रमुख एवं जीवनव्रती कार्यकर्ता रवि शर्मा रहे। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अनिल सामरिया ने कहा कि योग फेस्ट का उद्देश्य विद्यार्थियों, चिकित्सकों एवं आमजन में योग के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि एक चिकित्सा महाविद्यालय के रूप में हमारा दायित्व केवल रोगों का उपचार करना ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य संवर्धन एवं रोगों की रोकथाम के प्रति समाज को जागरूक बनाना भी है। योग इस दिशा में एक प्रभावी एवं वैज्ञानिक माध्यम है। मुख्य अतिथि रवि शर्मा ने अपने उद्बोधन में योग दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धांतों—तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान एवं प्रसाद बुद्धि—पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि पतंजलि द्वारा वर्णित नियमों में तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान का विशेष स्थान है तथा इन तीनों का समन्वित अभ्यास व्यक्ति को आत्मविकास, मानसिक शांति एवं आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करता है। उन्होंने बताया कि तप का अर्थ केवल कठिन साधना नहीं, बल्कि जीवन में अनुशासन, संयम, नियमितता एवं आत्मनियंत्रण स्थापित करना है। वहीं स्वाध्याय का तात्पर्य आत्मचिंतन एवं अपने कर्मों का आत्ममूल्यांकन करना है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने गुणों एवं कमियों को पहचानकर स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। प्रतिदिन किए गए कार्यों और उनके परिणामों को निष्ठापूर्वक ईश्वर को समर्पित करना ही ईश्वर-प्रणिधान है। रवि शर्मा ने आगे कहा कि कर्मयोग के सिद्धांत के अनुसार वर्तमान परिस्थितियों में अपने सामर्थ्य के अनुरूप कर्म करने का अधिकार मनुष्य को प्राप्त है, किंतु कर्म के फल पर उसका अधिकार नहीं होता। इसलिए चाहे कर्मफल अनुकूल हो या प्रतिकूल, उसे समभाव से स्वीकार करना चाहिए। यही दृष्टिकोण व्यक्ति को आगामी कर्मों के लिए मानसिक दृढ़ता एवं आत्मशांति प्रदान करता है। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने विषय से संबंधित प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। अंत में सभी से इन सिद्धांतों को अपने दैनिक जीवन में अपनाने का आह्वान किया गया, ताकि व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ स्वस्थ एवं संतुलित समाज का निर्माण किया जा सके। कार्यक्रम का संचालन डॉ. श्याम भूतड़ा ने किया। इस अवसर पर जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय के अधीक्षक डॉ. अरविंद खरे, अतिरिक्त प्राचार्य डॉ. दीपा थडानी, डॉ. कमलेश तनवानी, अतिरिक्त अधीक्षक डॉ. जय प्रकाश, उप अधीक्षक डॉ. अमित यादव, डॉ. सुनील माथुर, डॉ. आभा भारद्वाज, डॉ. एम.पी. शर्मा, डॉ. प्रदीप वर्मा, डॉ. विजयलता रस्तोगी, डॉ. विकास सक्सेना, डॉ. स्वर्णलता अजमेरा, डॉ. कल्पना अग्रवाल, डॉ. पूनम गोगनिया, डॉ. मीना शर्मा, डॉ. महेंद्र खन्ना, डॉ. महेश मेहता, डॉ. नरेंद्र महेश्वरी सहित विवेकानंद केंद्र से भरत भार्गव, अंकुर प्रजापति तथा बड़ी संख्या में रेजीडेंट चिकित्सक एवं नर्सिंग कर्मी उपस्थित रहे।

संतों के खिलाफ आपराधिक मानसिकता रखने वालों पर होगी कड़ी कार्रवाई : एसपी मिश्रा

साधु-संतों पर अभद्र टिप्पणी करने वालों को मिले कठोर दंड : जज्जी

विशाल बाइक रैली निकालकर जैन समाज ने मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

अशोकनगर. शाबाश इंडिया

जैन साधु-संतों पर हो रहे हमलों एवं सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर की जा रही अभद्र और अमर्यादित टिप्पणियों से आहत जैन समाज एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों ने बुधवार को सुभाष गंज मैदान से विशाल बाइक रैली निकालकर कलेक्ट्रेट पहुंचकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। रैली का नेतृत्व राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना मंच के कार्याध्यक्ष हुकम काका (कोटा), संत सेवा संगठन के राष्ट्रीय संयोजक रविन्द्र पत्रकार (भोपाल), नगर पालिका अध्यक्ष नीरज मनोरिया, पूर्व विधायक जजपाल सिंह जज्जी, जैन समाज अध्यक्ष राकेश कंसल, महामंत्री राकेश अमरोद तथा कोषाध्यक्ष सुनील अखाई ने किया। कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित सभा के दौरान संयुक्त कलेक्टर, एसडीएम, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गजेन्द्र सिंह कंवर, एसडीओपी विवेक शर्मा सहित अन्य अधिकारियों ने विभिन्न संगठनों की ओर से प्रस्तुत ज्ञापन प्राप्त किए। पूर्व विधायक जजपाल सिंह जज्जी ने कहा कि कुछ दिग्भ्रमित स्थानीय युवक ऐसी गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं, जिन्हें तत्काल गिरफ्तार कर कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि साधु-संतों पर अभद्र टिप्पणी करने वालों को किसी भी स्थिति में बख्शा नहीं जाना चाहिए। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा ने कहा कि संत किसी एक समाज के नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की आस्था और संस्कृति के प्रतीक होते हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि दूषित मानसिकता के ऐसे लोगों को किसी भी कीमत पर छोड़ा नहीं जाएगा। पुलिस बिना किसी दबाव के पहले दिन से कार्रवाई कर रही है और दोषियों को चिन्हित कर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। संत सेवा संगठन के राष्ट्रीय संयोजक रविन्द्र पत्रकार ने कहा कि जिला पुलिस प्रशासन सराहनीय कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि सामाजिक सौहार्द को षड्यंत्रपूर्वक बिगाड़ने की कोशिश करने वाले अपराधियों का पकड़ में आना अत्यंत आवश्यक है। राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना मंच के कार्याध्यक्ष हुकम काका ने कहा कि यदि आवश्यकता पड़ी तो इस मुद्दे पर देशव्यापी आंदोलन और धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। नगर पालिका अध्यक्ष नीरज मनोरिया ने कहा कि संतों के विरुद्ध घृणित मानसिकता रखने वाले लोगों को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने बताया कि केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया एवं मुख्यमंत्री के संज्ञान में मामला आने के बाद संबंधित अधिकारियों को कठोर कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। मध्यप्रदेश महासभा के संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि यदि कोई भी व्यक्ति या समूह धन के लालच में साधु-संतों के विरुद्ध अभियान चला रहा है तो ऐसे लोगों की पहचान कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए, जिससे सामाजिक सौहार्द बना रहे। ज्ञापन का वाचन राकेश अमरोद एवं शैलेन्द्र श्रागर ने किया।

अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों ने दिया समर्थन

कार्यक्रम में समाज के पदाधिकारियों एवं विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इनमें अजित वरोदिया, प्रदीप तरई, शैलेन्द्र श्रागर, विजय धुर्रा, संजीव भारिल्य, अरविंद कचनार, संजय के.टी., अशोक जैन, मनोज भैसरवास, विपिन सिंघई, शैलेन्द्र दद्दा, राजेन्द्र हलवाई, नरेश भाई शालू, सुभाष जैन, विनोद मोदी, मनीष वरखेड़ा, राहुल सिंघई, गौरव जैन, हेमंत टडैया, आलोक रानीपुर, दीपक जैन, इन्द्र गांधी, वर्षा बड़कुल, सीमा पंसारी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

विशाल श्री श्याम अमृत महोत्सव में दिखा श्रद्धा, भक्ति और उल्लास का अद्भुत संगम

जयपुर.शाबाश इंडिया

श्री श्याम सत्संग महिला मंडल के तत्वावधान में सी-स्कीम स्थित पृथ्वीराज रोड के महारानी बैंक्वेट में आयोजित विशाल श्री श्याम अमृत महोत्सव श्रद्धा, भक्ति और उल्लास का अनुपम संगम बन गया। भजन संध्या के दौरान जैसे ही कलाकारों ने हारे का सहारा बाबा श्याम हमारा... और श्याम तेरी बंसी पुकारे राधा नाम... जैसे लोकप्रिय भजनों की प्रस्तुति दी, पूरा पंडाल श्याममय हो उठा। श्रद्धालु भजनों की धुन पर झूम उठे और लखदातार के जयकारों से वातावरण गूंजायमान हो गया। कार्यक्रम संयोजक चंद्र प्रकाश अग्रवाल एवं मोहनलाल अग्रवाल ने बताया कि महोत्सव की सभी तैयारियां पूर्व निर्धारित समय पर पूर्ण कर ली गई थीं। भजन संध्या में प्रसिद्ध भजन गायक मनीष गर्ग, मास्टर रेहांश, गोविंद निशा शर्मा, अविनाश शर्मा, अमित नामा, राज राठौड़ एवं अजय शर्मा ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। कलाकारों ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति देकर देर रात तक भक्तों को भक्ति रस में सराबोर रखा। महोत्सव में बड़ी संख्या में महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कई श्रद्धालु भजनों की मधुर धुनों पर नृत्य करते नजर आए, जबकि अन्य भक्त तालियों और जयकारों के माध्यम से अपनी आस्था व्यक्त करते रहे। पूरे आयोजन के दौरान श्याम नाम की गूंज और भक्तों का उत्साह देखते ही बन रहा था। देर रात तक चले इस भव्य आयोजन में भक्ति और संगीत का ऐसा अद्भुत संगम देखने को मिला, जिसने उपस्थित श्रद्धालुओं के मन में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार कर दिया। आयोजन के समापन तक श्रद्धालुओं का उत्साह बरकरार रहा और पूरा परिसर श्याम भक्ति के रंग में रंगा नजर आया।

वृन्दावन से आए कलाकारों की रासलीला एवं मयूर नृत्य ने मोहा मन

हनुमान टेकरी आश्रम में सप्तदिवसीय श्री विष्णु-लक्ष्मी महायज्ञ का दूसरा दिन श्रद्धा और भक्ति के साथ संपन्न

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

पुरुषोत्तम मास के पावन अवसर पर भगवान श्रीहरि एवं माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति के उद्देश्य से धर्मनगरी भीलवाड़ा के छोटी हरणी स्थित हनुमान टेकरी आश्रम में महंत बनवारीशरण काठियाबाबा के सान्निध्य में पहली बार आयोजित सप्तदिवसीय श्री विष्णु-लक्ष्मी महायज्ञ के दूसरे दिन मंगलवार को भी श्रद्धा और भक्ति का अनुपम वातावरण देखने को मिला। लक्ष्मी स्वरूपा कन्याओं के साथ यजमानों ने विधि-विधान से महायज्ञ में आहुतियां अर्पित कीं। महायज्ञ का संचालन श्री शारदा सनातन परमार्थ न्यास के वेदाचार्य पंडित मुकेश शास्त्री के निर्देशन में किया जा रहा है। 11 कुंडीय विष्णु-लक्ष्मी महायज्ञ में प्रत्येक यज्ञ वेदी पर एक लक्ष्मी स्वरूपा कन्या के साथ यजमानों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच आहुतियां दी गईं। यज्ञ प्रारंभ होने से पूर्व आहुति देने वाली कन्याओं का विधिवत पूजन भी किया गया। महायज्ञ के माध्यम से राष्ट्र कल्याण, सर्वजन सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना की गई। यह महायज्ञ 14 जून तक प्रतिदिन प्रातः 8:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक आयोजित किया जाएगा। महायज्ञ के अंतर्गत छोटी हरणी स्थित काठिया बाबा आश्रम परिसर में श्री राधा रासेश्वरी रासलीला मंडल, श्रीवृन्दावन धाम (मथुरा) द्वारा भक्तिमय रासलीला का शुभारंभ सोमवार रात्रि को हुआ। पहले दिन महंत बनवारीशरण काठियाबाबा के सान्निध्य में वृन्दावन से आए कलाकारों ने रासलीला एवं मनमोहक मयूर नृत्य की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। मंडल के दामोदरदास काठियाबाबा के निर्देशन में भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े विभिन्न प्रसंगों का मंचन किया गया। मंडल के राजू स्वामी ने बताया कि प्रस्तुति में कंस द्वारा उग्रसेन को कारागार में बंद कर स्वयं राजा बनने तथा देवकी और वासुदेव के विवाह जैसे प्रसंगों का जीवंत मंचन किया गया। रासलीला के समापन पर प्रस्तुत मयूर नृत्य ने पूरे वातावरण को भक्ति रस से सराबोर कर दिया।

एसएफएस दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य शशांक सागर महाराज के सानिध्य में शांतिधारा संपन्न, धर्मसभा में गुरु महिमा का किया वर्णन

जयपुर. शाबाश इंडिया

मानसरोवर के राजावत फार्म स्थित एसएफएस श्री दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान आचार्य 108 श्री शशांक सागर महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में मंगलवार को भगवान श्रीजी का महामस्तकाभिषेक एवं भव्य शांतिधारा का आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति के साथ संपन्न हुआ। इसके पश्चात धर्मसभा आयोजित की गई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। मंदिर समिति के अध्यक्ष कमलेश चंद जैन एवं महामंत्री सोभागमल जैन ने बताया कि शांतिधारा का सौभाग्य सुरेंद्र-सुनीता जैन, शुभम-तन्वी जैन, आयुषी, नविका हल्दैनिया, विनोद-दीपिका जैन (कोटखावदा), भागचंद-शर्मिला पहाड़िया, दिनेश मुशर्रफ, अनिल-नीता जैन, विनोद-बीना जैन, नीतू-सलोनी छाबड़ा, अजय-मीनू जैन, लीला, अरविंद, चिंकी तथा सुनील जैन परिवार को प्राप्त हुआ। विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि आचार्य श्री के मुखारविंद से उच्चारित मंगलमय मंत्रों के बीच इन्द्र-इन्द्राणियों ने चांदी की झारी से भगवान श्रीजी का अभिषेक किया। इस दौरान पूरा मंदिर परिसर णमोकार महामंत्र की गूंज से गुंजायमान हो उठा। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य 108 श्री शशांक सागर महाराज ने कहा कि ''गुरु इस भवसागर से पार उतारने वाली नौका हैं। गुरु के बिना आत्मकल्याण का मार्ग नहीं मिलता। जिस प्रकार सूर्य के बिना कमल नहीं खिलता, उसी प्रकार सद्गुरु के बिना जीवन में धर्म का प्रकाश संभव नहीं है।'' उन्होंने श्रावकों का आह्वान किया कि प्रत्येक गृहस्थ को प्रतिदिन देव-शास्त्र-गुरु की पूजा, स्वाध्याय एवं धर्म प्रभावना का संकल्प लेना चाहिए। तभी समाज में अहिंसा, सत्य और करुणा का व्यापक प्रसार हो सकेगा। इससे पूर्व दीपिका जैन कोटखावदा, सुनीता हल्दैनिया एवं उर्मिला पाटनी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री को अर्घ्य अर्पित कर एवं श्रीफल भेंट कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। समापन अवसर पर विनोद जैन कोटखावदा ने सभी उपस्थित श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया। जिनवाणी स्तुति के साथ धर्मसभा का समापन हुआ। कार्यक्रम में महिला मंडल, युवा मंच, पाठशाला के बच्चों सहित सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे। प्रातः 10:00 बजे आचार्य संघ की आहारचर्या संपन्न हुई।